ज्ञान तत्व कमांक–382

मंथन कमॉक–104 ''गांधी, गांधीवाद और सर्वोदय''

कुछ वैचारिक निष्कर्ष हैः–

1. पिछले 100–200 वर्षो में गांधी एक सर्वमान्य सामाजिक विचारक के रूप में स्थापित हुये जिन्हें सम्पूर्ण विश्व में समान मान्यता प्राप्त है। आज भी गांधी की प्रासंगिकता उसी तरह बनी हुयी है।
2. संगठन विचारों की कब्र होता है। संगठन महापुरूष के विचारों को दीर्घकालिक बनाता है, रूढ बनाता है और किसी संशोधन के विरूद्ध उसी तरह टकराता है जिस तरह उक्त महापुरूष को टकराना पडा था।
3. संगठन मृत महापुरूषों के विचार समाज तक पहुॅचाने का सबसे सफल और घातक माध्यम होता है इसलिए मृत महापुरूषों के विचार बिना विचारे कभी अक्षरशः स्वीकार नहीं करना चाहिए।
4. जब वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित होती है तब महाजनों येन गतः स पन्थाः का आंख मूंदकर अनुकरण करना चाहिए और जब जन्म पर आधारित हो तब बिल्कुल स्वीकार नहीं करना चाहिए।
5. गांधी समस्याओं के समाधान कर्ता थे और विनोबा संत। गांधी समझदार थे और विनोबा शरीफ। गांधी ने स्वतंत्रता दिलाई और विनोबा ने राजनेताओं की गुलामी।
6. गांधी और लोहिया में बहुत फर्क था राजनैतिक मामलों में लोहिया गांधी के समान सत्ता के अकेन्द्रीयकरण के पक्षधर थे और आर्थिक मामलों में सत्ता के केन्द्रीयकरण के जबकि गांधी दोनों मामलों में अकेन्द्रीयकरण चाहते थे।
7. जयप्रकाश, विनोबा और लोहिया में बहुत फर्क था। विनोबा सत्ता से बाहर रह कर आचार्य कुल के माध्यम से राजनीति पर अंकुश रखने तक सीमित रहना चाहते थे तो जयप्रकाश सत्ता के साथ तालमेल करके उसका शुद्धिकरण चाहते थे और लोहिया उसमें घुसकर।
8. नाथुराम गोडसे और नेहरू में बहुत फर्क था। एक ने गांधी की शरीर की हत्या कर दी तो दूसरे ने विचारों की।
9. गोडसे का मार्ग गलत था और नेहरू की नीयत। गोडसे यदि गलत विचारों से प्रभावित न होता गांधी के साथ जुडा होता तो नेहरू की तुलना में अच्छा प्रधानमंत्री बन सकता था।
10. गोडसे का कार्य समाज के लिये घातक और अक्षम्य अपराध था साथ ही हिन्दू धर्म के लिए कलंक भी था।

जब भी समाज में कोई विचारक गंभीर विचार मंथन के बाद कुछ निष्कर्ष निकालता है तो वह निष्कर्ष समाज की प्रचलित मान्यताओं से कुछ भिन्न होता है। यदि उक्त निष्कर्ष समाज की तात्कालिक समस्याओं के समाधान में निर्णायक परिणाम देता है तो उक्त विचारक महापुरूष बन जाता है। उक्त महापूरूष के निष्कर्षो को सामान्य लोग बिना विचार किये ही स्वीकार करने लग जाते है। विचारक से महापुरूष बनने तक के बीच के कालखंड में विचारों को समाज तक पहुंचाने के लिये एक संगठन की आवश्यकता होती है। ऐसा संगठन उक्त विचारक के जीवन काल में भी बन सकता है और जीवन पश्चात भी। संगठन विचारों को समाज तक पहुॅचाने की व्यवस्था करता है और जब उक्त विचार सफल प्रमाणित हो जाता है तब उक्त विचार को धीरे–धीरे रूढ बनाकर उन पर संगठन कुन्डली मारकर बैठ जाता है। इस तरह संगठन विचारों की कब्र होता है। संगठन के माध्यम से विचार सुरक्षित, अदृश्य, दीर्घकालिक और अनुपयोगी हो जाते है। संगठन विचारों को पुनर्विचार से दूर कर देते है। तात्कालिक समस्याओं के समाधान के लिये जब कोई नया विचार सामने आता है तो उक्त

संगठन के महापुरूष को आक्रमण झेलने पडते है। प्रत्येक संगठन अपने महापुरूष के साथ किये गये दुर्ष्यवहार को अत्याचार घोषित करता है जबकि वह स्वयं भी आगे वाले विचारकों के साथ बिल्कुल वैसा ही अत्याचार करना शुरू कर देता है।

महात्मा गांधी ने गुलाम भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। उन्होंने इस संग्राम के लिये सत्य और अंहिंसा को मुख्य मार्ग घोषित किया। विदेशी वस्तु बहिष्कार उनका सहायक मार्ग था। धार्मिक, सामाजिक, जातीय एकता उक्त संग्राम के उपमार्ग थे, चर्खा, खादी और गांधी टोपी उक्त संग्राम की पहचान स्वरूप थें, लक्ष्य सिर्फ एक था, बिल्कुल स्पष्ट और सर्वमान्य था राष्ट्रीय स्वराज्य। स्वराज्य के लिये उन्होने मार्ग, सहायक मार्ग, उपमार्ग, सहायक उपमार्ग आदि तय किये और तदनुसार ही वे इन मार्गों की उपयोगिता भी मानते थें। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा से कभी समझौता नहीं किया क्योंकि यह उनका मुख्य मार्ग था। चर्खा, खादी, गांधी टोपी से वे समझौते के लिये तैयार थे। यदि कोई व्यक्ति भिन्न वस्त्र टोपी या भिन्न संगठन वाला भी हो तो वे उसका बहिष्कार नहीं करते थें। गांधी के आन्दोलन में सब प्रकार के लोग शामिल थे चाहे वे गांधी जी के बताये कुछ उप मार्गो से असहमत ही क्यो न हों। गांधी जी ने अपने जीवन में किसी को अछूत नहीं माना क्योंकि उनके विचारों में अछूत कार्य होता है कर्ता नहीं। उन्होंने नारा दिया पाप से घृणा करो पापी से नहीं। गांधी जी ऐसे ऐसे बीमारों की भी सेवा करते थे जिनकी बीमारी गांधी जी को नुकसान कर सकती थी किन्तु उन्होंने ठीक करने का भरसक प्रयास किया।

गांधीजी के बाद उनके विचारों ने गांधीवाद का स्वरूप ग्रहण किया। गांधीवाद की एक सर्वमान्य परिभाषा थी तत्कालीन समस्याओं का सत्य और अंहिसा के मार्ग से समाधान का प्रयत्न। इसमें तत्कालीन समस्याओं का समाधान लक्ष्य था और सत्य अंहिंसा मार्ग। गांधी के बाद गांधीवाद विचारों से दूर होने लगा और धीरे–धीरे विचारों से हटकर संस्कार बन गया। अब उसकी परिभाषा बदल कर हो गई सत्य और अहिंसा के आधार पर ही समस्याओं के समाधान का प्रयत्न। सत्य और अंहिसा लक्ष्य बन गया, समाधान गौण। समस्याओं की पहचान के लिये तात्कालिक परिस्थियों के साथ कोई तालमेल नहीं रहा और धीरे–धीरे गांधी से दूर होता चला गया।

गांधी की मृत्यु के बाद राजनेताओं ने पंडित नेहरू के नेतृत्व में गांधीवाद के दुरूपयोग की योजना बनाई। गांधी संस्थाओं के पक्षधर थे और नेता संगठन बनाना चाहते थे। उन लोगों ने सीधे–साधे विनोबा को धोखा देकर एक सर्व–सेवा–संघ नाम से गांधीवादियों का संगठन बना दिया। बिचारे विनोबा जीवन भर समाज सुधार का कार्य करते रहे और देशभर के राजनेता सारे हिन्दुस्तान को राजनैतिक आधार पर गुलाम बनाने में सफल हो गये। सर्वोदय के लोग आज भी देशभर में समाज सेवा के उच्चकीर्ति मान बनाते देखे जाते है और सारा मालमलाई 70 वर्षो से देश के नेता खा रहे है लेकिन सर्वोदय के लोगों की या तो आंख बंद है या असहाय है अथवा हो सकता है जूठन से संतुष्ट हो।

इसमें शामिल अधिकांश लोग बहुत त्यागी चरित्रवान पद और धन के प्रलोभन से दूर उच्च संस्कारवान है किन्तु उनमें विचार एवं चिन्तन शक्ति का सर्वथा अभाव है। वे समस्याओं का ठीक–ठीक ऑकलन नहीं कर पातें। वे समस्याओं के समाधान के लिये अहिंसा को शस्त्र के रूप में प्रयोग न करके अपने पलायन की ढाल के रूप में उपयोग करते है। वे विपरित विचार वालों से तर्क नहीं कर सकते। विचार मंथन इनके आचरण में दूर–दूर तक नहीं है।

गांधी विपरीत विचार रखने वाले को अछूत नहीं मानते थें गांधीवादी उन्हें अछूत मानकर घृणा करते है। गांधी जी स्वयं को इतना दृढ मानते थे कि उन पर असत्य के प्रभावी होने का कोई भय नहीं था परिणाम स्वरूप वे सबके बीच अपनी वात रखने का साहस करते थें। गांधीवादी इतने भयभीत है कि वे दुसरों के विचारों से प्रभावित होने के डर से उनसे दूर भागते है। गांधी जी वैचारिक विस्तार के पक्षधर थे। गांधीवादी संगठन की सुरक्षा में ही परेशान रहते है। गांधी जी इस्लाम के खतरे को भली भांति समझते हुए भी एक रणनीति के अन्तर्गत उनसे समझौता करते थे। गांधीवादी इस्लाम के खतरे को न समझते है न समझना चाहते है। गांधी जी पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष थे। वे साम्प्रदायिकता को कभी स्वीकार नहीं करते थे। गांधीवादी धर्मरिपेक्षता का एक ही अर्थ समझते है संघ का विरोध और मुस्लिम तुष्टीकरण। गांधी जी साम्यवाद को घातक विचार मानते थे गांधीवादी साम्यवाद को समझते ही नहीं। मुझे तो आश्चर्य होता है कि हिंसा का सैद्धान्तिक रूप से भी और व्यावहारिक रूप से भी समर्थन करने वाले साम्यवादियों और आतंकवादी मुसलमानों के विरूद्ध गांधीवादियों का न कभी प्रत्यक्ष विरोध दर्ज होता है और न परोक्ष। किन्तु यदि प्रशासन इनके विरूद्ध कोई कठोर कदम उठाता है तो गाधींवाद अवश्य ही विरोध में हल्ला करना शुरू कर देते है। गांधी जी सरकारीकरण के बिल्कुल विरूद्ध थे और समाजीकरण के पक्षधर थे गांधीवादी सरकारीकरण के पक्षधर है और समाजीकरण को समझते ही नहीं। वे तो व्यापारीकरण के स्थान पर सरकारीकरण की वकालत तक करते है। गांधी जी निजीकरण के स्थान पर समाजीकरण चाहते थे। गाधींवादी निजीकरण का विरोध तो करते है परन्तु वे सरकरी कारण को या तो समझते नहीं या उनके संस्कार उनकी समझदारी में बाधक है।

आज देश में ग्यारह समस्याएँ बढ रहीं है। भारत के सभी राजनैतिक दल इन ग्यारह समस्याओं के समाधान की अपेक्षा दस प्रकार के नाटकों में संलग्न है। इन राजनैतिक दलो की नीतियाँ तो गलत है ही नीयत भी गलत है। साम्यवादी भी अपने राजनैतिक उदेश्यों की पूर्ति के लिये इन दस नाटकों को प्रोत्साहित करते रहते हैं। संघ परिवार की नीयत अर्ध राजनैतिक है। उसकी नीतियाँ साम्प्रदायिकता से भी प्रभावित है और पूँजीवाद से भी। परिणाम स्वरूप वे सात समस्याओं के तो समाधान की चिन्ता करते है किन्तु आर्थिक असमानता और श्रम शोषण पर नियंत्रण की वे कभी नहीं सोचतें। मिलावट की रोकथाम के विषय में भी वे चुप ही रहते है। क्योंकि मिलावट और व्यापार का चोली दामन का संबंध बन गया है। सबसे दुखद है कि संघ परिवार साम्प्रदायिकता के विषय में भी स्पष्ट नहीं है। उसके अनेक कार्य तो साम्प्रदायिकता को मजबूत करने मे ही सहायक होते है। गांधीवादियों का वर्ग ही एक ऐसी जमात है जो राजनीति से संबंध नहीं रखती किन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि इनकी नीयत ठीक होते हुए भी नीतियाँ देश की सभी ग्यारह समस्याओं के विस्तार में सहायक हो रही है। राजनीतिज्ञ जानबूझकर नाटक करते रहते हे और गांधी वादी अनजाने में उसके पात्र बन जाते हैं। मेरा यह आरोप अत्यन्त ही गंभीर हैं और हो सकता हैं कि यह गलत ही हो किन्तु अब तक मैंने जो समझा वह ऐसा ही है और यदि इस संबंध में कोई बहस छिडती है तो मैं उसका स्वागत ही करूँगा।

मैंने गांधी को बहुत सुंना ओर समझा है। गांधीवाद को भी प्रयोग करके पूरी तरह सफल होता देखा है और गांधीवादियों से भी खूब चर्चा की हैं। गांधीवादी तर्क से बहुत भागते है। वे स्वयं को अन्य लोगों से अधिक श्रेष्ठ और आचरणवान मानकर दुसरों से घृणा करते है। किसी भी मामले मे अपनी बात कहीं नहीं कहते बल्कि जो भी कहते है उसमें गांधी, विनोबा, जयप्रकाश का नाम जोडे बिना न एक लाईन लिख सकते है, न बोल सकते है और न भाषण दे सकते है। उन्होंने गांधी, विनोबा, जयप्रकाश को कभी समझने का प्रयास किया हो तब तो वे उनकी बात को अपने शब्दों में वर्तमान स्थितियों के

साथ जोडकर कह पातें। उन्हे तो सभी समस्याओं के समाधान के रूप में गांधी, विनोबा, जयप्रकाश के उस समय की परिस्थितियों में कहे गये शब्दों के आधार पर बने उनके संस्कार ही पर्याप्त दिखते है और यही आज की सबसे बडी समस्या है। अधिकांश गांधीवादी इन बातों को समझते भी है और गुप्त रूप से चर्चा भी करते है किन्तु संस्कारित गांधीवादियों के समक्ष वैचारिक गांधीवादी हमेशा भयभीत रहते है। कितनी चिंता की बात है कि जो गांधी गुजरात से अहिंसा की शिक्षा लेकर सारी दुनियां का मार्गदर्शन करने में सफल हुआ उसी गुजरात से हिंसा का पाठ सीखकर नरेन्द्र मोदी सारी दुनियां में लगातार सफल होते जा रहे है। क्योंकि सर्वोदय के पास मृत गांधी, विनोबा, जयप्रकाश का नाम मात्र है, अपने विचार नहीं। वे संघ की आलोचना तक सीमित है, विकल्प नहीं बता सकते। चितंन का विषय है कि जो गांधी अंहिसा और सत्य को सर्वोच्च स्थान देते थे वहीं गांधीवादी अब नक्सलवादियों और मुस्लिम उग्रवादियों के पक्ष में खडे दिखते है। जिस गांधी को हिन्दुओं के बहुमत का समर्थन प्राप्त था उन हिन्दुओं को गांधीवादियों ने धक्का देकर संघ परिवार के पक्ष में खडा कर दिया क्योंकि गांधी के पास मौलिक चिंतन था और सर्वोदय के पास मात्र नकल। गांधी के पास समझदारी थी तो सर्वोदय के पास शराफत। सर्वोदय के लोग साम्यवादियों के जाल में फॅसकर इतने अंधे हो गए थे कि उन्हें साम्यवादी गांधी व विनोबा के समान दिखते थे। एक बाद ठाकुरदास बंग, सिदराज ढडडा आदि ने इस संगठनात्मक ढॉचे को तोडने का प्रयास किया तो कुमार प्रशांत ने आगे आकर साम्यवादियों के पक्ष में इस सुधार का भरपूर विरोध किया और सफलता पायी।

मैं महसूस करता हूँ कि स्वतंत्रता के बाद जिन ग्यारह समस्याओं का विस्तार हुआ है उसका समाधान सिर्फ गांधीवाद के पास है। न तो इसका समाधान पूंजीवाद के पास है न ही साम्यवाद के पास। ये दोनों ही या तो समस्याओं को बढा सकते है या उससे लाभ उठा सकते है ं। गांधीवाद ही इनके समाधान का मार्ग निकाल सकता है और आज की समस्याओं के समाधान के निमित्त गांधीवाद को कोई गांधी ही परिभाषित कर सकता है गांधीवादी नहीं। क्योंकि गांधी दाण्डी यात्रा समस्या के समाधान के लिये करते थे और ये गांधी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए नकल करते है। गांधी जी के वस्त्र किसी पूर्व महापुरूष की नकल न होकर भारत के आम निवासियों के दुख दर्द की असल थें। ये लोग नकल करके गांधी चश्मा,उनके कपडे और उनकी दाण्डी यात्रा करके गांधी बनना चाहते है। ये गांधी को कभी समझे नहीं तो गांधीवाद को क्या समझेगें। इस लिए आज भारत को एक गांधी की जरूरत है, एक ऐसे गांधी की जो अपना नाम गांधी रखे या कोई और, वह चाहे खादी पहने या कुछ और, वह दाण्डी यात्रा करे या कोई और यात्रा करे यह महत्वपूर्ण नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि वह गांधी के सत्य और अहिंसा का डण्डा ओर झण्डा उठाकर ग्यारह समस्याओं के समाधान के लिए निकल पडे और भारत की सभी हिंसक, साम्प्रदायिक, जातीय स्वार्थान्ध, राजनैतिक शक्तियों को एकसाथ चुनौती देकर घोषणा करें कि अब तक हमने बहुत सहा अब सहेगें नही, हम चुप रहेंगे नहीं, झंडा उठा लेगे हम।

मै जानता हूँ कि स्थापित संगठन ऐसे विचारों को बरदाश्त नही कर सकते। यदि किसी गांधी ने आकर गांधीवाद को इस ढंग से परिभाषित किया तो उक्त विचारक गांधी को सबसे पहले टकराव संस्कारित गाधींवादियों का ही झोलना पडेगा और वह टकराव किसी भी सीमा तक जा सकता है। यदि गांधी ने इन संस्कारित गांधीवादियों को समझाकर कोई मार्ग निकाल लिया तब तो उसके जीते जी ग्यारह समस्याओं के समाधान का मार्ग निकल सकता हे अन्यथा उनका भी वही हाल होगा जो इशुमसीह का हुआ गांधी का हुआ और तब उनके बाद उनके नाम से एक नया संगठन नयावाद खडा होगा औंर दुनियां में वादों के साथ एक नया वाद जुडकर वाद–विवाद में सहायक बन जायेगा।

मंथन कमॉक–105 ''जीव दया सिद्धांत''

कुछ निष्कर्ष हैः–

1. कोई भी व्यक्ति व्यक्तिगत सीमा तक ही किसी अन्य पर दया कर सकता है, अमानत का उपयोग नहीं किया जा सकता। राजनैतिक सत्ता समाज की अमानत होती है, व्यक्तिगत नहीं।
2. समाज में चार प्रकार के लोग होते है– मार्गदर्शक, रक्षक, पालक और सेवक। मार्गदर्शक और पालक को प्रवृत्ति में दयालु होना चाहिए जबकि रक्षक और सेवक को दयालु प्रवृत्ति प्रधान नहीं होना चाहिए।
3. न्यायाधीश को प्राप्त शक्ति तंत्र की अमानत होती है। न्यायाधीश को किसी भी मामले में किसी के साथ दया करने का अधिकार नहीं है।
4. मनुष्य को छोडकर किसी अन्य जीव को मौलिक अधिकार प्राप्त नहीं है। पशु–पक्षी या पेड–पौधे का कोई मौलिक अधिकार नहीं होता।
5. समाज किसी भी पशु जीव पेड–पौधे को अवध्य घोषित कर सकता है किन्तु कोई वर्ग नहीं कर सकता। किसी वर्ग द्वारा घोषित किसी पशु पक्षी को सम्मान देना अन्य वर्ग की मजबूरी नहीं है।
6. जो लोग गाय को माता न समझ कर पशु समझते है उनकी स्वतंत्रता में तब तक बाधा नहीं पहुॅचाई जा सकती जब तक सम्पूर्ण समाज ने मान्य न किया हो।
7. सब प्रकार के जीवों के बीच संतुलन होना चाहिए। जीव दया का सिद्धांत असंतुलन पैदा करता है। दया या हिंसा करना व्यक्ति की स्वतंत्रता है, बाध्यता नहीं।
8. बंदर, कुत्ते और नील गायों की बढती संख्या अव्यवस्था फैलाती है। बंदर हनुमान का भी प्रतीक हो सकता है और बालि का भी।
9. भारत के वर्तमान कानूनों में दया का भाव अधिक होने के कारण अपराध भी बढ रहे है तथा आवारा पशुओं की संख्या भी अव्यवस्था फैला रही है।

मेरा अपना अनुभव है कि जीव दया का सिद्धांत अधिक प्रभावी होने से अव्यवस्था फैलती है जैसा भारत में हो रहा है। सरकारों ने अनेक अनावश्यक कानून बना दिये है। पशुओं को किस प्रकार का कष्ट दिया जाये इसके भी नियम बनाये गये है। कोई व्यक्ति अमानवीय तरीके से अपने पशु को नहीं पीट सकता न हीं अमानवीय तरीके से काट सकता है। मुर्गे को काटा जा सकता है रेत–रेत कर जब्हा किया जा सकता है किन्तु ठूस–ठूस कर गाडी में नही भरा जा सकता क्योंकि कानून इसकी इजाजत नहीं देता। जब मनुष्य को छोडकर किसी भी अन्य जीव को मौलिक अधिकार प्राप्त नहीं है तब सरकार ऐसे मामले में कानून कैसे बना सकती है। फिर भी सरकारे कानूनों का दखल बढा रही हैं। राज्य अनेक मामलों में दया करने का अपना अधिकार सुरक्षित रखता है जबकि राज्य की शक्ति समाज की अमानत है और समाज के निर्णय के बाद ही राज्य किसी के साथ दया कर सकता है, किन्तु वह करता है। यदि राज्य दया करने लग जायेगा तो समाज में अपराध और अव्यवस्था बढेगी ही वर्तमान समय में राज्य निरंतर ऐसा ही कर रहा है।

मैं हिमाचल के एक गांव में गया था। मैंने देखा कि वहॉ के आम लोग बंदरों से बहुत परेशान थे लेकिन वे धार्मिक भावना से बंदर को मार नहीं सकते थे और कानून भी उन्हें रोकता था। मैंने उन्हें सलाह दी कि आपको जो बंदर हनुमान सरीखा दिखे उसकी रक्षा किजिए और बालि सरीखा दिखे तो मार देना चाहिए क्योंकि भगवान राम ने भी ऐसे बंदर का वध किया था। बिहार और उत्तर प्रदेश में बडी संख्या में किसान नील गायों से परेशान है। मुख्यमंत्री नितिश कुमार ने इस समस्या को समझकर समाधान करना चाहा तो निकम्मे धर्म–प्रेमियों ने रोडा डालने का प्रयास किया। हमारे छत्तीसगढ के सरगुजा संभाग में हाथियों का उत्पात मचा हुआ है। जंगली हाथी प्रति वर्ष बडी मात्रा में फसलों को नुकसान करते है, ग्रामीणों के घर तोड देते है और सैकडों की संख्या में निरपराध लोगों की हत्या कर देते है। यदि ग्रामीण किसी आक्रामक हाथी की हत्या कर दे तो वह जेल में बंद कर दिया जायेगा किन्तु यदि हाथी किसी ग्रामीण की हत्या कर दे तो उसे सिर्फ दो लाख रूपये मुआवजा दिया जायेगा। दूसरी ओर ग्रामीण अगर किसी ट्रेन एक्सीडेंट में या दुर्घटना में मर जाये तो मुआवजा दो लाख से कई गुना अधिक मिल सकता है किन्तु हाथी के मारने पर दो लाख की भीख सरकार द्वारा दी जाती है। बडी संख्या में आवारा कुत्ते निर्दोष लोगों को काटते है और उसके लिये भारी संकट झेलना पडता है। मैं जब नगरपालिक का अध्यक्ष था तब मैंने आवारा कुत्तों को मरवाने का अभियान चलाया। अनेक तथाकथित दयालु लोग सामने

आये कि कुत्तों को इस तरीके से निर्दयतापूर्वक मारना ठीक नहीं है। इन नासमझों ने कभी यह नहीं सोचा कि इन कुत्तों के काटे हुये लोग कितनी परेशानी झेल रहे है। जीव दया के नाम पर जिस प्रकार असंतुलन बढाया जा रहा है वह भारत के कृषि उत्पादन पर भी बहुत विपरीत प्रभाव डाल रहा है।

मैं देख रहा हूँ कि गौ हत्या के नाम पर नर हत्या का भी समर्थन किया जा रहा है। गाय आपकी माता है, आवश्यक नहीं कि वह मेरी भी माता हो। गाय कोई धार्मिक प्रतीक नहीं है क्योंकि हिन्दू अपने को साम्प्रदायिक न मानकर समाज के रूप में मानता है अर्थात हिन्दुत्व जीवन पद्धति है सिर्फ पूजा पद्धति तक सीमित नहीं है। ऐसी स्थिति में गौ रक्षा का निर्णय समाज जब तक नहीं करता तब तक आप किसी को यह मजबूर नहीं कर सकते है कि वह गाय को माता माने। जीव दया के सिद्धांत में सबसे ज्यादा अव्यवस्था जैन लोगों ने की है। भगवान महावीर ने अपना वैचारिक और नैतिक प्रभाव डालकर दया और अहिंसा पाठ पढाया, कानून का सहारा कभी नहीं लिया। निकम्में दयावान लोग कानून के द्वारा दया भाव का विस्तार करना चाहते है जो एक गलत मार्ग है।

अहिंसा और दया के एक पक्षीय प्रचार ने भारत का बहुत नुकसान किया। शत्रु के साथ कैसी दया कैसी अहिंसा ? अहिंसा और दया भाव ज्ञान प्रधान तथा व्यवसायी प्रवृत्ति के लोगों तक सीमित रहना चाहिये। यदि राज्य भी अहिंसा और दया करने लगेगा तो गुलामी स्वाभाविक है। आज सारी दुनियां में यदि कटटरवादी इस्लाम समस्या के रूप में खडा हो रहा है तो उसका मुख्य कारण यही अहिंसा और दया का भाव है। स्पष्ट नीति बननी चाहिये कि राज्य का काम अहिंसा या दया करना नहीं है क्योंकि राज्य को दी गई शक्ति समाज की अमानत है और राज्य का दायित्व सुरक्षा और न्याय। उसके लिए आवश्यक है कि हिंसा और दया के बीच संतुलन हो। यदि असंतुलन होता है तो राज्य को ऐसा संतुलन बनाने के लिए समुचित हिंसा का उपयोग करना चाहिए।

जो विचारक या व्यवसायी हैं उन्हें दया और अहिंसा को अपनाना चाहिये किन्तु कभी राज्य पर दबाव नहीं बनाना चाहिये कि वह अहिंसा और दया को नीतियों का आधार बनाये। मेरे विचार से वर्तमान भारत में दयाभाव का विस्तार एक समस्या के रूप में विस्तार पा रहा है। इसे समाधान के रूप में आना चाहिए।

मंथन क्रमांक 106–समस्या कौन ? इस्लाम या मुसलमान

कुछ निश्चित सिद्धान्त है।

1 प्राचीन समय मे धर्म व्यक्तिगत होता था कर्तब्य के साथ जुडा होता था । वर्तमान समय मे धर्म संगठन के साथ भी जुडकर विकृत हो गया है।

2 हिन्दू विचार धारा धर्म की वास्तविक परिभाषा से जुडी हुई है जबकि संघ परिवार साम्यवाद और इस्लाम संगठनात्मक परिभाषा से ।

3 हिन्दू बहुमत गुण प्रधान धर्म को महत्व देता है तो मुसलमान बहुमत संगठन प्रधान धर्म को।

4 दुनियां मे दो प्रकार के व्यक्ति होते है। 1 प्रेरक 2 प्रेरित। आम तौर पर प्रेरक संचालक होते है और प्रेरित संचालित।

5 दुनियां मे कुल मिलाकर जितने अपराध धर्म के नाम पर होते है उससे कई गुना कम अपराध वास्तविक अपराधियो द्वारा।

6 धर्म की आदर्श परिभाषा संख्या विस्तार मे बाधक होती है और संगठन प्रधान परिभाषा बहुत लाभदायक।

7 गुण प्रधान धर्म राज्य की विचार धारा को प्रभावित करने तक सीमित रहता है जबकि संगठन प्रधान धर्म राज्य की सभी गतिविधियो पर सहभागिता करना चाहता है। मुसलमान इस मामले मे सबसे अधिक सक्रिय रहता है।

8 गुण प्रधान धर्म व्यक्ति के मौलिक अधिकार मानता है संगठन प्रधान धर्म मौलिक अधिकार को अमान्य करके व्यक्ति को सामाजिक अधिकार तक सीमित करता है।

9 संगठित इस्लाम संख्या वृद्धि के लिये सब प्रकार के साधनो का उपयोग करना धर्म समझता है चाहे साधन नैतिक हो या अनैतिक । दुनियां के अन्य धर्मो की तुलना मे मुसलमान इसे पहला दायित्व समझता है।

प्राचीन समय मे गुण प्रधान धर्म को ही एक मात्र मान्यता प्राप्त थी। इस्लाम ने इस मान्यता को बदलकर उसमे संगठन प्रधानता का समावेश कर दिया जो धीरे धीरे बढकर अब मुख्य आधार बन चुका है। इस्लाम का जो समूह जितना

अधिक संगठित है वह उतनी ही अधिक तेज गति से विस्तार कर रहा है। यह संगठित समूह सबसे पहले राज्य पर नियंत्रण करने का प्रयास करता है। इन समूहो मे वर्तमान समय मे सुन्नी समुदाय सबसे आगे है जबकि सुफी गुण प्रधान होने के कारण सबसे कमजोर। 14गुण प्रधान इस्लाम 5 शिक्षाओ को ज्यादा महत्व देता है। एकेश्वर वाद, रोजा, नमाज, जकात, हज। संगठन प्रधान इस्लाम संख्या विस्तार बहु विवाह राज्य व्यवस्था पर अंकुश तथा हिंसा पर अधिक विश्वास करता है। 15गुण प्रधान इस्लाम भिन्न विचार धाराओ का भी सम्मान करता हैं तो संगठन प्रधान इस्लाम किसी अन्य के अस्तित्व को ही स्वीकृति नही देता। गुण प्रधान सहजीवन को महत्व देता है। संगठन प्रधान इस्लाम एकला चलो की नीति पर विश्वास करता है।

यदि हम संगठन प्रधान धर्म की उत्पत्ति पर विचार करे तो वह किसी व्यक्ति तथा किसी ग्रंथ पर अंतिम विश्वास के साथ शुरू होती है। धीरे धीरे संगठन विस्तार करता है और जब निरंतर विस्तार करता रहता है तब कुछ सौ वर्षो मे वह संगठन संप्रदाय का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। जब संप्रदाय भी कुछ सौ वर्षो तक बढता जाता है तब वह धीरे धीरे अपने को धर्म कहने लग जाता है। इस्लाम के साथ भी यही हुआ और अन्य संगठन प्रधान धर्मो के साथ भी। धीरे धीरे जैन बौद्ध और सिख भी विस्तार के साथ साथ धर्म बनते चले गये। आर्य समाज धर्म बनने मे पिछड गया तो संघ परिवार निरंतर विस्तार पर है। संगठन सफलता की सीढिया चढकर अपने को धर्म घोषित कर देता है जबकि वर्तमान समय मे हिन्दुत्व को छोडकर कोइ भी अन्य अपने को धर्म कहने का हकदार नही है क्योकि अन्य एक महापूरूष तथा एक ग्रन्थ को अंतिम सत्य मानते है और दूसरो के अस्तित्व नही मानते जबकि हिन्दू इसके ठीक विपरीत है। इस तरह कहा जा सकता है कि हिन्दुत्व जीवन पद्धति है संगठन नही। हिन्दू संगठनो का समूह कहा जा सकता है ।

वर्तमान समय मे इस्लाम संगठन शक्ति के आधार पर जितनी तेज गति से आगे बढा उतनी ही तेज गति से बदनाम भी हुआ। 16मुसलमान और उसका एक मात्र धर्म ग्रन्थ कुरान प्रेरक है तो मुसलमान प्रेरित । कुरान मे ही गुण प्रधान धर्म की शिक्षाओ का भी विस्तृत विवरण है तो कुरान मे ही संगठन प्रधान धर्म को भी पूरी मान्यता दी गई है। मुसलमान जिस दिशा मे जाना चाहता है उस दिशा मे जाने की पूरी शिक्षाए कुरान मे उपलंब्ध है। 17मुसलमान आम तौर पर भावना प्रधान होता है, प्रेरित होता है, धर्म भीरू होता है और इमानदार होता है। मुसलमान संगठनात्मक विस्तार के लिये जो भी हिंसा और अपराध करता है उसकी प्रेरणा भी उसे कुरान से ही प्राप्त होती है। इसका अर्थ हुआ कि 18दुनियां मे मुसलमना यदि एक गंभीर समस्या के रूप मे स्थापित हो रहा है तो उसका कारण धर्म ग्रंथ कुरान है और उसके प्रमुख धर्म गुरू कुरान के उस खतरनाक अंश को मुसलमानो तक ज्यादा प्रयास करके पहुचाते है। कुरान मे चार शादी करने को अच्छा नही माना गया है। इसका अर्थ हुआ कि मुसलमान यदि चार से अधिक शादी करता है तब वह पतित होगा चार से कम मे नही। यदि कोई सरकार यह नियम बना ले कि उसके देश का मुसलमान एक से अधिक विवाह नही करेगा तो मुल्ले मौलवी इसे धर्म के विरूद्ध प्रचारित करते है क्योकि यह संख्या विस्तार के विरूद्ध जाता है जबकि कुरान ऐसा नही कहता। गोमांस भक्षण भी मुसलमान के लिये आवश्यक नही है। इस तरह अनेक ऐसे मामले है जो संगठन प्रधान इस्लाम के लिये प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाते है और उस प्रतिष्ठा के लिये कही न कही कुरान की आयते खोज ली जाती है जिस पर सभी मुसलमानो की गहरी आस्था है।

समस्या बहुत जटिल है क्योकि मुसलमान प्रेरित है और इस्लाम प्रेरक । प्रेरक कभी अपराध नही करता क्योकि प्रेरक तो सिर्फ प्रेरणा देने तक सीमित रहता है। प्रत्यक्ष क्रिया मे उसकी कोई भूमिका नही होती। स्वाभाविक है कि ऐसी स्थिति मे दुनियां के निशाने पर मुसलमान ही होते है जो अपने धर्म गुरूओ और धर्म ग्रंथो की प्रेरणा से प्रभावित होकर समस्याए पैदा करते है। जबकि वास्तविक दोष धर्म ग्रंथो और धर्म गुरूओ का होता है। समाज के पास इसका कोई विकल्प नही दिखता क्योकि धर्म ग्रंथ मुसलमानो के लिये अंतिम सत्य है और वह उससे भिन्न कोई आचरण नही कर सकता । दुसरी ओर धर्म ग्रंथो मे किसी प्रकार का बदलाव संभव नही है। इसलिये समाधान बहुत सोच समझकर योजना बद्ध तरीके से करना होगा। मुसलमानो को धीरे धीरे व्यवहार के माध्यम से समझा बुझा कर धार्मिक दिशा मे मोडना होगा जिससे वे अपने संगठनात्मक ढाचे से दूरी बनावे । दूसरी ओर संगठनात्मक इस्लाम के साथ कुछ कठोर व्यवहार उचित होगा । वर्तमान समय मे संघ परिवार ने राष्टीय मुस्लिम मंच के नाम से जो नई पहल शुरू की है उसे और अधिक विस्तार दिये जाने की आवश्यकता हैं। यह पहल मुसलमानो के सहजीवन के साथ जुडने की प्रेरणा देगी। इस पहल से मुसलमान संगठन प्रधान इस्लाम से

कुछ दुरी बना सकेगा और भारत दुनियां की इस खतरनाक प्रवृत्ति को बचने की पहल कर सकेगा। मेरा ऐसा मत है कि इस समय विशेष परिस्थिति मानकर तथा सब प्रकार के भेद भाव भूलकर राष्टीय मुस्लिम मंच का तेजी से विस्तार करना चाहिये।

मंथन कमांक–107 ''भारत की राजनीति और राहुल गांधी''

कुछ स्वीकृत निष्कर्ष हैः–

1. धर्म और राजनीति में बहुत अंतर होता है। धर्म मार्ग दर्शन तक सीमित होता है और राजनीति कियात्मक स्वरूप में। धर्म सिद्धान्त प्रधान होता है और राजनीति व्यवहार प्रधान। धर्म में नैतिकता प्रमुख होती है तो राजनीति में कूटनीति प्रमुख होती है
2. लोकतंत्र तानाशाही की तुलना में अच्छा तथा लोकस्वराज की तुलना में बुरा समाधान माना जाता है। लोकतंत्र में लम्बे समय बाद अव्यवस्था निश्चित होती है और उसका समाधान होता है तानाशाही
3. भारत की राजनीतिक व्यवस्था लोकतंत्र न होकर संसदीय तानाशाही के रूप में कार्यकर रही है। तंत्र मालिक है और लोक गुलाम
4. स्वतंत्रता के बाद मनमोहन सिंह सबसे अधिक लोकतांत्रिक और सफल प्रधानमंत्री माने जाते है। पुत्रमोह में सोनिया गांधी ने मनमोहन सिंह को अस्थिर किया।

भारतीय राजनीति में इंदिरा गांधी के कार्यकाल से ही कांग्रेस पार्टी कोई राजनैतिक दल न होकर एक पारिवारिक सत्ता के रूप में स्थापित हो गयी थी जो आज तक यथावत है। जो लोग इसे दल मानते है वे पूरी तरह से भ्रम में है। किन्तु यदि नैतिकता और राजनीति के समन्वय की बात करे तो नेहरू और इंदिरा गांधी अधिक अनैतिक तथा कूटनीतिज्ञ के रूप में माने जाते है जबकि राजीव गांधी, सोनिया गांधी और राहुल अपेक्षाकृत अधिक नैतिकता के पक्षधर। इंदिरा गांधी, पंडित नेहरू और संजय गांधी के व्यक्तिगत आचारण के साथ यदि राजीव और सोनिया के अचारण की तुलना की जाये तो जमीन आसमान का फर्क दिखता है। युवा अवस्था में विधवा होने के बाद भी सोनिया गांधी की प्रंशसा करनी चाहिये। यह प्रंशसा तब और महत्वपूर्ण हो जाती है जब सोनिया जी विदेशी संस्कार में पली बढी हैं। इस मामले में राहुल गांधी की भी प्रशंसा करनी चाहिये कि जहॉ 16 से 20 वर्ष के बीच के भारतीय नवयुवक और धर्मगुरू अपने को सुरक्षित नही रख पा रहे हो वही 48 वर्ष का नौजवान अविवाहित राहुल गांधी अच्छा आचरण प्रस्तुत कर रहे हो। सोनिया जी ने जिस तरह प्रधानमंत्री पद का मोह छोडकर मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाया वह उनकी राजनीति में नैतिकता की पराकाष्ठा कही जा सकती है किन्तु बाद में उन्होंने पुत्रमोह में पडकर जिस तरह मनमोहन सिंह को कमजोर किया वह उनकी नैतिकता के लिये एक अनैतिक आचरण ही माना जाना चाहिये। मनमोहन सिंह के कार्यकाल में जितनी अव्यवस्था बढी उसका बडा भाग सोनिया गांधी की चालाकी से पैदा हुआ था। उस समय मैनें ज्ञान तत्व कमॉक 279 और 282 में लिखकर सोनिया जी को सलाह दी थी कि वे राहुल को अभी आगे स्थापित करने की जल्दबाजी न करे अन्यथा नरेन्द्र मोदी का प्रधानमंत्री बनना निश्चित हो जायेगा। मैंने यह भी लिखा था कि अभी राहुल गांधी शराफत के मामले में बहुत परिपक्व है किन्तु कूटनीति का अभाव है जो किसी राजनेता का अनिवार्य गुण माना जाता है। मेरी बात नहीं सुनी गयी और परिणाम जो होना था वह हुआ। यदि कोई उक्त अंक फिर से पढना चाहे तो मैं आवश्यकतानुसार फेसबुक या व्हाटसअप एप में डाल सकता हूॅ।

पांच वर्ष बीत चुके है और अभी भी मेरी धारणा वहीं बनी हुयी है कि राहुल गांधी में गांधी के गुण अधिक है और नेहरू के कम। राहुल गांधी सफलतापूर्वक कांग्रेस अध्यक्ष का कार्य तो कर सकते है किन्तु प्रधानमंत्री के पद के लिये अभी पूरी तरह अयोग्य है क्योंकि उनमें कूटनीति का अभाव है शराफत बहुत अधिक है। वैसे भी राजनैतिक सूझबुझ यही कहती है कि राहुल गांधी की जगह किसी अन्य विपक्षी नेता अथवा सत्तारूढ दल में से किसी को भी आगे करके पांच वर्षो के लिये राहुल गांधी को प्रतीक्षा करनी चाहिये। यह प्रतीक्षा देश हित में भी होगी, कांग्रेस पार्टी के हित में भी होगी और राहुल गांधी के हित में तो होगी ही।

वर्तमान समय में देश की राजनीति ठीक दिशा में जा रही है। नरेन्द्र मोदी बिल्कुल ठीक दिशा में जा रहे है। प्रतिपक्ष की भूमिका में भी नितिश कुमार और अखिलेश यादव तक राजनीति केन्द्रीत हो रही है। राहुल गांधी इस राजनैतिक ध्रुवीकरण के बीच अनावश्यक पैर फंसा रहे हैं। सत्ता के लालच में जाति संघर्ष अथवा क्षेत्रीयता का उभार अल्पकालिक लाभ दे सकता है किन्तु उससे दीर्घकालिक नुकसान संभावित है। गुजरात में अलपेश ठाकुर के माध्यम से जो लाभ उठाया गया उसका नुकसान भी स्वाभाविक है।

राहुल गांधी के आचरण से भारत की राजनीति मे आमूल चूल बदलाव दिख रहा है। अब तक भाजपा और संघ हिन्दुत्व के अकेले दावेदार थे। साथ ही मुस्लिम कट्टरवाद वोट बैंक के रूप में अन्य सभी राजनीतिक दलों की ढाल बना हुआ था। राहुल गांधी ने पहल करके इस समीकरण की पूरी तरह से बदल दिया है । अब भाजपा और संघ हिन्दू मुस्लमान के बीच ध्रुवीकरण करने में कठिनाई महसूस कर रहे है क्योंकि राहुल की पहल के बाद अन्य सभी राजनीतिक दलों ने भी हिन्दू वोट बैंक का महत्व समझ लिया है। मैं पांच वर्ष पहले भी स्पष्ट था और आज भी मानता हूँ कि इस बदलाव में राहुल गांधी की कोई राजनैतिक योजना न हो कर यह उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है जो पहले स्पष्ट नहीं दिख रही थी। राहुल गांधी हिन्दू मंदिरों में अधिक जाकर कोई ढोंग नही कर रहे है क्योंकि राहुल गांधी मे दीर्घ कालिक ढोग की समझ ही नही है। राहुल के जीवन में वास्तविक हिन्दुत्व की धारणा मजबूत हो रही है।

इस हिन्दुत्व के नवजागरण मे भी राहुल गांधी से एक भूल हुई है। नरेन्द्र मोदी एक राजनीति के सफल खिलाडी है तो राहुल गांधी एक असफल अनाडी। एक वर्ष पहले तक यह स्पष्ट दिख रहा था कि संघ परिवार ओर नरेन्द्र मोदी एक साथ नही रह सकेगे । टकराव अवश्य ही होगा और वह टकराव राहुल गांधी के लिये लाभदायक होगा । किन्तु राहुल गांधी ने जिस तरह अल्प कालिक लाभ के लिये संघ के समक्ष प्रवीण तोगडिया का सहारा लिया उसके कारण संघ और मोदी के बीच की दूरी समाप्त हो गयी। अब राहुल गांधी के सामने यह संकट है कि वे कट्टरवादी हिन्दुत्व और जातिय टकराव को एक साथ कैसे रख पायेगे । संघ ने तो पंद्रह दिन पूर्व मोहन भागवत के भाषण के माध्यम से स्पष्ट कर दिया कि वह नरेन्द्र मोदी के साथ नरम हिन्दुत्व की ओर बढेगे। राहुल गांधी के अलावा अन्य सभी विपक्षी दल भी नरम हिन्दुत्व की ओर जाने को लालायित है। राहुल गांधी मे इतनी समझ नही है कि वे कट्टरपंथी इस्लाम और कट्टरपंथी हिन्दुत्व की दो नावो की सवारी एक साथ कर सके। राहुल को चाहिये था किवे संध परिवार और मोदी के बीच की दूरी को हवा दें। किन्तु ऐसा लगता है कि वे चूक गये। मैं अभी भी इस मत का हूँ कि सोनियां गांधी के आगे आकर यह घोषणा कर देनी चाहिये कि अगले पांच वर्ष के लिय किसी भी परिस्थिति मे नेहरू इंदिरा परिवार का कोइ भी व्यक्ति प्रधानमंत्री नहीं बनेगा। शायद यह घोषणा नरेन्द्र मोदी की सफलता मे बाधक बन सके। शायद पांच वर्ष बाद राहुल गांधी का नम्बर आ जाये अन्यथा अधिक सम्भावना यही दिखती है कि राहुल गांधी माया मिले न राम की तरह न गांधी जैसे संम्मानित स्थान पा सकेगे और न ही नेहरू और इंदिरा सरीखे राजनीतिक शक्ति पा सकेगें।

श्री आचार्य पंकज जी का जीवन परिचय

ज्ञान–यज्ञ के प्रेरणा स्रोत व सामाजिक विषय के प्रख्यात विचारक श्री बजरंग मुनि जी के विचारों से प्रभावित एवं तार्किक तालमेल रखते हुए मुनि जी के साथ कई प्रमुख विषयो के कार्यो में साथ रहे। आचार्य पंकज जी का जन्म ग्राम–हरहुआ वाराणसी उत्तर प्रदेश में 01 जुलाई 1947 में हुआ है। उनके पिता का नाम स्व0 पं0 कुलदीप शास्त्री राजवैद्य तथा स्व0 माता का नाम श्रीमति सरस्वती है। आचार्य जी की वर्तमान समय में आयु 71 वर्ष की है और उन्होने प्रारंभिक शिक्षा वाराणसी से प्रारंभ कर आचार्य तक की शिक्षा अर्जित की व संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के अध्यक्ष रहे। इसके बाद आचार्य जी ने अपने जीवन को सामाजिक दिशा में मोड़ करके कई प्रमुख क्षेत्रों में कार्य करते हुये अपने जीवन को समर्पित कर क्रमबद्ध पूर्वक जैसे सामाजिक कार्या के साथ–साथ ''लेखन–चिंतन'' में लगा दिया। आपके द्वारा रचित पुस्तक ''नींद हाराम काव्य संग्रह'', ''आगे बढो'', ''संस्कृत साहित्य'' प्रमुख संग्रह है। वेद वेदांत के ज्ञान का कार्य तथा (लोकतंत्र सेनानी) की भूमिका में जे.पी आंदोलन में 19 माह तक जेल में नजरबंद रहे और इसके पश्चात राजनैतिक क्षेत्र में जनता पार्टी के कई महत्वपूर्ण पदो में रहे जिसमें ''राष्ट्रीय महासचिव'' युवा जनता, जनता पार्टी भारत, का दायित्व निभाया। 1978 ई0 में विश्व युवा समारोह लेटिन अमेरिका में भारत का प्रतिनिधित्व किया तथा नई दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी दैनिक समाचार ब्यूरो के संपादक व अन्य कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभाते हुये आपकी मुनि जी के साथ सामाजिक कार्य के

प्रति सदैव रूचि बनी हुयी है इसलिए आपने वर्तमान समय में ज्ञान–यज्ञ के संरक्षक व बजरंग मुनि सामाजिक शोध संस्थान, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड के प्रमुख निदेशक के दायित्व की जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए समाज में संतुलन स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है और निस्वार्थ भाव से सामाजिक व धार्मिक कार्यो में भूमिका निभाते रहते है। आचार्य पंकज जी ने छात्र जीवन में देश के विश्वविद्यालयों में वाद–विवाद प्रतियोगितायों में भाग लेकर कई स्वर्ण पदक प्राप्त किए हैं। आपके द्वारा किये गये सफलतापूर्वक कार्यो के लिए ज्ञान यज्ञ परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

– अभ्युदय द्विवेदी, राष्ट्रीय संयोजक ''ज्ञान–यज्ञ''

समाज सेवी डॉ राजे सिंह नेगी जी का जीवन परिचयः–

तीर्थ नगरी ऋषिकेश एवं हरिद्वार की सीमा के बीचोबीच संगम के रूप में प्रकाशित ग्राम सभा हरिपुरकलॉ क्षेत्र में बहुत ही समान्य परिवार में जन्मे डॉ राजे सिंह नेगी आज किसी पहचान के मोहताज नहीं है। डॉ राजे नेगी जी का जन्म 24 मई 1983 को ग्राम सभा हरिपुर कलॉ में श्री प्रेम सिंह नेगी जी एवं शीला देवी के तृतीय पुत्र के रूप में हुआ था। उनकी माता श्रीमती शीला नेगी जी गृहणी है। डॉ राजे नेगी जी के पिता श्री प्रेम सिंह नेगी जी अब सेवा निवृत्त अध्यापक हैं। उनके सबसे बड़े भाई मनमोहन सिंह नेगी केंद्रीय विद्यालय रायवाला में खेल शिक्षक के रूप में कार्यरत है और दूसरे बड़े भाई अरविंद सिंह नेगी भारतीय थल सेना में नायक पोस्ट पर हैं। डॉ नेगी की धर्मपत्नी विनीता नेगी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र फकोट टिहरी गढ़वाल में नेत्र दृष्टिमितिज्ञ के पद पर कार्यरत है।उनकी दो पुत्रियां है। डॉ नेगी का पूरा परिवार अभी भी संयुक्त परिवार के रूप में एक साथ रहते है। डॉ राजे नेगी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा से हाई स्कूल तक की पढ़ाई हरिपुरकलॉ में की। उसके बाद बारहवीं की शिक्षा विज्ञान विषय से राजकीय इंटर कॉलेज रायवाला से उत्तीर्ण की। उसके बाद मेडिकल में ग्रेजुएशन के साथ ही नेत्र विज्ञान में 3 वर्ष का डिप्लोमा करने के बाद गत 5 वर्षों से ऋषिकेश में अपना स्वयं नेत्र क्लिनिक चला रहे हैं। क्लीनिक चलाने के साथ–साथ सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहकर डॉक्टर नेगी जी स्वास्थ्य, शिक्षा एवं लोकभाषा के क्षेत्र में समाज हित में लगातार कार्यरत रहते है। उनके द्वारा अब तक 100 से अधिक निशुल्क नेत्र शिविरों का आयोजन एवं दो दर्जन से ज्यादा रक्त एवं स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जा चुके हैं।

इसके अलावा शिक्षा के क्षेत्र में ऋषिकेश मायाकुंड में संचालित निशुल्क शिक्षण संस्थान उड़ान उनकी एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा जाता है। डॉ नेगी जी द्वारा स्कूल में गरीबी की पृष्ठभूमि से पीडित लगभग पचास से अधिक बच्चों को निशुल्क शिक्षा के साथ ही स्कूल में जरूरत की सभी चीजें मुहैया कराई जाती है। डॉ नेगी जी द्वारा संचालित यह विद्यालय प्रदेश में गढ़वाली लोकभाषा पढ़ाया जाने वाला एकमात्र प्राथमिक विद्यालय है। इसके साथ–साथ डॉ नेगी जी द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में जुटे हुए गरीब पृष्ठ भूमि के मेधावी युवाओं को निशुल्क कोचिंग की सुविधा भी दिलाई जाती है, जिसके लिए प्रतिवर्ष 100 सीटें निर्धारित की गई है जिसमें साक्षात्कार लेकर चयन प्रक्रिया के माध्यम से युवाओं को निशुल्क कोचिंग हेतु प्रवेश दिया जाता हैं।

डॉ नेगी जी द्वारा गढ़वाल महासभा का गठन कर लोकभाषा एवं लोक संस्कृति के संरक्षण हेतु अब तक कई साहित्य–सम्मेलन, साहित्य–गोष्ठी, लोक भाषा कवि–सम्मेलन तथा दर्जनों पुस्तकों का लोकार्पण के साथ–साथ उत्तराखंड के जाने–माने गायकों व उभरते कलाकारों की ऑडियो एवं वीडियो एलबमो लोकार्पण साथ अब तक आधा दर्जन आंचलिक फिल्मों (उत्तराखंड की फिल्मों) का प्रदर्शन करवाने में मुख्य भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तर के पत्रकारों, वृद्धो, सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करने वाले लोगो, उभरते प्रतिभाओं को सम्मानित करना एवं उनको मंच प्रदान करना भी उनके सामाजिक कार्य में सम्मिलित हैं तथा पौड़ी गढ़वाल ''योग एसोसिएशन'' के चेयरमैन होने के नाते समय–समय पर योगासन प्रतियोगिताओ का आयोजन एवं योग के प्रतिभागियों द्वारा राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता से लौटने वाले प्रतियोगियों को सम्मानित कराना। उत्तराखंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन के संरक्षक के तौर पर जुड़े रहकर प्रदेश एवं जिला स्तरीय खेल से जुड़ी हर प्रकार की प्रतियोगिताओ के आयोजन में सहयोग एवं प्रतिभागियो का मनोबल बढ़ाने का काम भी करते हैं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एवं नशा मुक्ति आदि राष्ट्रीय एवं राज्य के जिले स्तर पर अपनी टीम के साथ मिलकर क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों में अभियान व कैंप चलाए जाते हैं। डॉ नेगी जी को उपलब्धि के तौर पर अब तक प्रदेश की कई संस्थाओं द्वारा राज्य के महामहिम राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं कैबिनेट मंत्री के द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। व्यवस्था परिवर्तन मंच के माध्यम से अब तक ऋषिकेश को जिला बनाने तथा ऋषिकेश में डिग्री कॉलेज की मांग एवं हरिद्वार तक आने वाली सभी ट्रेनों को ऋषिकेश तक लाने के साथ–साथ, पूरे प्रदेश के सरकारी अस्पतालों में चिकित्सकों की नियुक्ति एवं एम्स में स्थानीय लोगों की नियुक्ति तथा एम्स में इलाज की बढ़ाई गई दरों को कम करने जैसे स्थानीय महत्वपूर्ण मुद्दों पर डॉक्टर नेगी जी व उनकी टीम द्वारा आमरण अनशन एवं आंदोलन किए जा चुके हैं। जिसमें कई मुद्दों पर सफलता भी हासिल हुयी है।राज्य सरकार से नशा नहीं रोजगार एवं गैरसैण उत्तराखंड की राजधानी बनाने जैसी मुख्य मांग को लेकर डॉ नेगी संघर्षरत है।

इसके अलावा गढ़वाल महासभा के द्वारा उनकी प्रदेशों के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में गढ़वाली कुमाऊंनी एवं जौनसारी राज्य की बोली को पढ़ाई जाने की मांग उठाई है तथा प्रदेश के हर जिले में सिनेमाघर एवं गढ़वाल व कुमाऊं भवन का निर्माण की भी मांग के साथ लगातार संघर्षरत है। इन्ही संघर्षो के बीच श्री आचार्य पंकज जी के माध्यम से प्रख्यात विचारक मौलिक चिंतक श्री बजरंग मुनि से मिले और मुनि जी द्वारा लिखी पुस्तक ज्ञान तत्व को पढकर तथा मुनि जी के विचारों से प्रभावित होकर ज्ञान–यज्ञ से जुडते हुए डॉ नेगी जी ने हरिद्वार–ऋषिकेश लोक प्रदेश प्रमुख की जिम्मेदारी लेते हुये दिनॉक 19 अगस्त 2018 को बजरंग मुनि सामाजिक शोध संस्थान के प्रबंध कार्यालय का शुभारंभ कराया व उसका पूरा संचालन डॉ नेगी जी द्वारा किया गया जो सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। बजरंग मुनि सामाजिक शोध संस्थान के अंतर्गत प्रत्येक रविवार को प्रबंध कार्यालय ऋषिकेष में ज्ञान यज्ञ के कार्यक्रम में भी डॉ राजे सिंह नेगी जी की बराबर सहभागिता रहती है। उक्त कार्यक्रम के सफलतापूर्ण आयोजन एवं ज्ञान यज्ञ को गति देने के लिए डॉ राजे सिंह नेगी को ज्ञान यज्ञ की तरफ से हार्दिक धन्यवाद व शुभकामनाएं।

–अभ्युदय द्विवेदी, राष्ट्रीय संयोजक, ''ज्ञान यज्ञ''।

सामयिकी

मैं लगभग साठ वर्षो से लिखता रहा हूँ कि हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति है, विचार धारा है, संस्थागत ढांचा है, संगठन नहीं। संघ परिवार हिन्दुत्व की मूल अवधारणा से अलग संगठनात्मक स्वरूप की दिशा में बढ रहा है। यदि साम्यवाद तथा इस्लाम संगठित स्वरूप में एक लाइलाज समस्या बन चुके हों तो संघ के नेतृत्व में हिन्दुओं को संगठित होकर उक्त बीमारी का इलाज करना चाहिये किन्तु यह संगठनात्मक सोच अल्पकालिक हो, इलाज तक सीमित हो, हिन्दुओं का मूल चरित्र न बन जावे अन्यथा हमारे और इस्लाम में फर्क क्या रहेगा। वे दाढी वाले मुसलमान हम चोटी वाले मुसलमान। मुझे लगता रहा कि संघ मेरी सोच के विपरीत सोचता है।

कल संघ प्रमुख मोहन भागवत जी ने जो कुछ कहा उससे मेरा संदेह दूर हो गया उन्होंने हिन्दुत्व की मूल अवधारणा की खुलकर चर्चा की। उन्होंने जातिवाद पर कडी चोट की, आरक्षण को मजबूरी बताया, मुसलमानों को प्रवृत्ति के आधार पर समझने की बात की तथा हिन्दुत्व को खान पान वेष भूषा से आगे बढकर वसुधैव कुटुम्बकम की ओर बढने की बात कही। उन्होंने गो हत्या का विरोध किया किन्तु लिंचिग को गलत बताकर उसके लिये संवैधानिक मार्ग की वकालत की।

मैं नही कह सकता कि संघ में यह वैचारिक बदलाव है अथवा संघ को मोदी सरकार के बाद यह विश्वास हो गया है कि साम्यवाद इस्लामिक गठजोड अब लाइलाज बीमारी नहीं है। जिस तरह राहुल गांधी तथा अन्य विपक्षी दल अपनी सत्तर वर्ष की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति में बदलाव लाकर हिन्दू तुष्टीकरण की ओर लपक रहे हैं उससे भी संघ में बदलाव आ सकता है। कारण चाहे जो हो किन्तु यह बदलाव बहुत महत्वपूर्ण है और मेरे मन में भी संघ के प्रति बदलाव की धारणा मजबूत कर रहा है।

एक ओर तो संघ प्रमुख ने इस्लाम के प्रति अपनी धारणा प्रस्तुत की दूसरी ओर भारत सरकार ने तीन तलाक अध्यादेश लाकर यह स्पष्ट कर दिया कि मुसलमानों को धार्मिक कट्टरता छोडनी ही होगी। भारत धार्मिक इस्लाम का पूरी

तरह स्वागत सम्मान करेगा किन्तु संगठित इस्लाम को कुचलने का भी हर प्रयत्न जारी रखेगा। मुसलमान रोजा, नमाज, जकात, कलमा आदि धार्मिक कार्यो के लिये पूरी तरह स्वतंत्र हैं किन्तु चार शादी, संख्या वृद्धि, तीन तलाक, धर्म स्थान विवाद, किसी टकराव की स्थिति में संगठित होकर कानून हाथ में लेना, चुनावों में संगठित होकर ब्लैकमेल करना, शरिया जैसी परंपराओं से हटना ही होगा। सरकार के अध्यादेश का जिस तरह कटटरपंथी मुसलमानों ने विरोध किया तथा कॉग्रेस सहित विपक्षी दलों ने कटटरपंथियों का समर्थन किया उससे ऐसा लगता है कि हिन्दुत्व के प्रति अब भी इन सबकी नीयत साफ नहीं है और वे सिर्फ मौके की तलाश में है।

भविष्य चाहे जो होगा किन्तु मैं संघ के इस बदलाव की भूरी–भूरी प्रशंसा करता हूॅ और मुस्लिम कट्टरपंथियों से निवेदन करता हूॅ कि वे संगठन की जगह सहजीवन के मार्ग को महत्वपूर्ण माने। मरता हुआ साम्यवाद अब आपकी सुरक्षा नहीं कर सकेगा।

सामयिकी

संपूर्ण विश्व में चीन को साम्यवाद का सर्वाधिक सफल देश और इस्लाम को सर्वाधिक सफल संगठन माना जाता है । जब से साम्यवाद कमजोर हुआ है तभी से साम्यवाद और इस्लामिक संगठनों के बीच तालमेल बढ़ा है। भारत में तो यह तालमेल पूरा ही है। किंतु आज तक के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ है कि इस्लामिक संगठन और साम्यवाद सहजीवन को स्वीकार करके टकराव का मार्ग छोड़ दे। किंतु चीन में दोनों अपने अपने स्वभाव के अनुसार आपसी टकराव के मार्ग पर हैं। चीन ने अपने देश में मुस्लिम बहुल प्रदेश के मुसलमानों को अपना स्वभाव बदलने के लिए बाध्य करना शुरू कर दिया है । मुसलमानों के लिए जेले बनाकर उन्हें सुधार गृह का नाम दिया जा रहा है। उनकी सभी इस्लामिक मान्यताओं को कानूनी आधार पर बदलने को मजबूर किया जा रहा है। उनके खान–पान तथा पूजा पद्धति में संशोधन कराने का अभियान चल रहा है। जिन मुसलमानों को भारत में समान नागरिक संहिता स्वीकार नहीं उन्हें वहाँ दूसरे दर्जे का नागरिक माना जा रहा है। सारे अत्याचार देखकर के भी दुनिया के मुस्लिम देश चुप है। खासकर पाकिस्तान तो बिल्कुल ही चुप है क्योंकि एक ओर तो वैसे ही इस्लाम संपूर्ण विश्व में संदेह की नजर से देखा जा रहा है दूसरी ओर पाकिस्तान को कटोरे में भीख की भी उम्मीद तो चीन से ही है। बोले तो क्या और कैसे बोले। सारी अकड़ ढीली हो गयी है।

विचारणीय प्रश्न यह भी है कि आज पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति ऐसी क्यों हुयी। पाकिस्तान ने कभी अपना इस्लामिक स्वभाव नहीं बदला हम भले ही भूखे मर जावे किंतु कश्मीर लेकर के ही रहेंगे इस संगठन वादी सोच का ही परिणाम है कि वह भुखमरी की स्थिति तक पहुंच रहा है। परिस्थिति अनुसार नीतियों में संशोधन करना चाहिये। पाकिस्तान कश्मीर तो ले पायेगा नहीं उल्टे भूखा अवश्य मरेगा। इसी तरह चीन के जो मुस्लिम संगठन चीन से टकराने की सोच रहे हैं वे भी भ्रम मे है । चीन कोई म्यांमार नही है जहां से निकल कर आप अन्य देशों में शरण पा लेंगे ।चीन की आंतरिक व्यवस्था एक लौह कवच है जिससे आप टकरा नहीं सकते ।इसलिए उचित होगा कि आप अपने स्वभाव को बदलें यदि आप सहजीवन स्वीकार करके टकराव का रास्ता छोड़ दे तो चीन सरकार भी दमन का मार्ग छोड़ सकती है। चीन का उद्देश्य आप के खान पान रहन सहन में बदलाव करना नहीं है बल्कि आपकी टकराव की आदत को बदलना है ।चीन पूरी दुनिया में आपके सर्वाधिक नजदीक है इसलिए सबसे टकराव अच्छी आदत नहीं ।

सामयिकी

पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने कुछ महत्वपूर्ण निर्णय दिये। आधार कार्ड के संबंध में सुप्रीम कोर्ट ने कानूनी व्यवस्था के पक्ष में निर्णय दिया कि आधार कार्ड किसी भी रूप में व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आक्रमण नहीं है। कोर्ट ने समलैंगिकता के कानून पर कहा कि ऐसा कानून व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आक्रमण है। कोर्ट ने व्यभिचार और बलात्कार को अलग–अलग करते हुए व्यभिचार को सामाजिक बुराई माना और बलात्कार को अपराध। न्यायालय के अनुसार शारीरिक इच्छा पूर्ति के लिये अनैतिक संबंध बनाना सामाजिक बुराई है किन्तु अपराध नहीं। कोर्ट ने मस्जिद और नमाज पर भी निर्णय दिया कि मस्जिद में नमाज पढना व्यक्ति की स्वतंत्रता है, अधिकार नहीं। कोर्ट ने महिलाओं को मंदिर जाने का समान अधिकार भी दिया। सबरीमाला मन्दिर में दस से पचास की उम्र तक की महिलाऍ नहीं जा सकती थी। एक अन्य निर्णय में कोर्ट ने

शहरी नक्सलियों के खतरे को यथार्थ मानते हुए उनकी नजरबंदी की अवधि बढा दी। कोर्ट ने महाराष्ट्र सरकार के प्रमाणों को महत्वपूर्ण माना। मेरे विचार से सभी निर्णय स्वागत योग्य हैं।

आधार एक बहुत ही अच्छी व्यवस्था है। आधार पूरी तरह अनिवार्य होना ही चाहिये। अपराधी तत्व ऐसी निश्चित पहचान से डरते हैं। उनकी बात न्यायालय ने नहीं सुनी। दो व्यक्तियों के बीच सहमत संबंधों में कोई कानून बाधक नहीं हो सकता। विवाह एक सामाजिक व्यवस्था है जिसे सामाजिक अनुशासन से ही जिन्दा रखा जा सकता है, सरकारी शासन से नहीं। यदि आप विवाह, तलाक, अनैतिक, संबंध आदि पर अधिक प्रतिबंध लगायेगे तो विवाह व्यवस्था ही छिन्न–भिन्न हो जायेगी। आप दो व्यक्तियों की आपसी स्वतंत्रता और सहमति में कानूनी हत्तक्षेप न करें तभी अच्छा होगा। सबरीमाला मन्दिर का निर्णय भी ठीक है। जब हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति है, इस्लाम, इसाई सरीखा सम्प्रदाय नही तो हिन्दू मंदिर यदि नितान्त व्यक्तिगत नहीं हैं तो सामाजिक है, सिर्फ हिन्दुओं के नहीं। उसकी व्यवस्था में सामूहिक भागीदारी होनी चाहिये। शहरी नक्सलियों का विषय अधिक चर्चा का विषय बन गया था। न्यायालय के रूख से ऐसा लगता था कि न्यायालय शहरी नक्सलियों को राहत देगा। नक्सल समर्थक वामपंथियों तथा पूरे विपक्ष ने भी बहुत जोर लगाया था किन्तु न्यायालय द्वारा नक्सलियों के खिलाफ निर्णय देने से आभास होता है कि या तो न्यायपालिका में साम्यवादियों का प्रभाव घट रहा है अथवा नक्सलियों के खिलाफ सरकार के पास इतने मजबूत प्रमाण थे कि न्यायालय अन्देखा नहीं कर सका।

मैं लम्बे समय से इन विषयों पर अपने विचार व्यक्त करता रहा हूँ। मैंने अपने विचार ज्ञान तत्व के माध्यम से लगभग चालीस वर्षो से समाज के समक्ष प्रस्तुत किये। मौखिक रूप से तो मैं साठ वर्षो से में लगभग ये सब बाते बोलता रहा हूँ। मेरे सरीखा सामन्य व्यक्ति इन मुददों पर स्पष्ट राय रखता रहा है किन्तु न्यायालय को ऐसे मामलों में निर्णय करने में सत्तर वर्ष लग गये और अभी भी अनेक मामलों में निर्णय होना बाकी है। अभी तो न्यायालय ने असामाजिक और अपराध को मात्र अगल–अलग करना शुरू किया है। व्यभिचार एक असामाजिक कार्य है और बलात्कार अपराध किन्तु कुछ अति उच्च चरित्रवान तथा स्वार्थी राजनेता असामाजिक और समाजविरोधी को एक मान लेते हैं। इससे ही भ्रम होता है। अभी तो यह प्रारंभ है धीरे–धीरे अनेक कानून रदद हो जायेंगे और समाज मजबूत होगा।

सामयिकी

श्री अनुज अग्रवाल एक सुलझे हुए विश्लेषक है । उनकी पत्रिका डायलाग इंडिया बौद्धिक जगत को अच्छा मार्ग दर्शन करती है। अक्टूबर अठारह के अंक के संवादकीय मे उन्होने नकली धर्म निरपेक्षता नरम हिन्दुत्व और गरम हिन्दुत्व का अच्छा विश्लेषण प्रस्तुत किया है किन्तु अंत मे उन्होने गरम हिन्दुत्व के विस्तार की जो संभावना व्यक्त की है उससे मै सहमत नही। मेरे विचार मे भारत मे गरम हिन्दुत्व का विस्तार घातक भी है और असंभव भी।

भारत एक हिन्दू बहुल देश है । हिन्दु संस्कृति तथा इस्लामिक संस्कृति मे आसमान जमीन का फर्क है। हिन्दू आम तौर पर अत्याचार सह सकता है किन्तु कर नही सकता दूसरी ओर इस्लाम आम तौर पर अत्याचार सह नही सकता भले ही कर सकता है। नरम हिन्दुत्व के सांस्कृतिक बदलाव मे पीढियां खप जायेगी क्योकि वह स्वाभाविक रूप से नरम है। मुसलमान को आसानी से गरम किया जा सकता है क्योकि वह स्वाभाविक रूप से गरम है। भारत मे हिन्दू महासभा सरीखे गरम हिन्दुत्व के समर्थक आगे नही बढ पाये और उनकी तुलना मे संध आगे बढा। भारत मे संघ की भी तुलना मे नकली धर्म निरपेक्षता ही हावी रही। यदि कांग्रेस पार्टी पूरी तरह इस्लाम समर्थक न हुई होती तो हिन्दू इस तरह इकठठा नही होता। अब भी यदि कुछ कटटर मुस्लिम मुल्ले मौलवी मूर्खता न करे तो हिन्दुओ का गुस्सा जल्दी ठंडा हो जायेगा।

जब नकली धर्म निरपेक्षता हिन्दुत्व की ओर झुकने को प्रयत्नशील है तो यह नरम हिन्दुत्व की सफलता मानी जानी चाहिये। भारत मे अब तक मोदी तथा संघ के हिन्दुत्व के प्रति इमानदारी पर संदेह नही हो सकता । यदि प्रवीण तोगडिया सरीखे गरम लोग नकली धर्म निरपेक्षो के साथ तालमेल कर रहे है तो यह उनकी मुर्खता होगी। वे स्वयं तो डूबेगे ही साथ मे कांग्रेस को भी डुंबो देगे क्योकि भारत का हिन्दू कभी मुसलमानो की तरह कटटरता पसंद नही हो सकता। मेरा मानना है कि संघ और मोदी की तुलना मे प्रवीण तोगडिया सरीखे गरम हिन्दुत्व के पक्षधर हारी हुई जंग लड रहे है जिनका प्रोत्साहन ठीक नही।

उत्तरार्ध

अपनो से अपनी बात

मै अब तीन चार माह से ऋषिकेश रहने लगा हूँ। दिल्ली कार्यालय का संचालन ओम प्रकाश जी दुबे और रामवीर जी कर रहे हैं तथा ऋषिकेश का आचार्य पंकज जी सम्हाल रहे है। मै कुछ समय दिल्ली तथा ज्यादा ऋषिकेश रहता हूँ। ऋषिकेश से ज्ञान यज्ञ तथा बजरंग मुनि सामाजिक शोध संस्थान का काम संचालित है तो दिल्ली से ग्राम संसद तथा जन संसद का।

सबका एक संयुक्त सम्मेलन दो और तीन फरवरी को नोयडा धर्मशाला मे होगा। एक फरवरी तक आप सबको आ जाना अधिक अच्छा है। सम्मेलन का पूरा संचालन अभ्युदय द्विवेदी जी द्वारा किया जायेगा । सम्मेलन मे पांच सत्र होगे। दो तारीख को प्रातः नौ बजे से एक बजे तक उदघाटन सत्र होगा तथा शोध संस्थान पर चर्चा होगी। । दो से पांच तक ज्ञान यज्ञ क्या क्यो और कैसे की चर्चा होगी। पांच से आठ तक जन संसद अभियान, तीन को प्रातः नौ से साढे बारह बजे तक ग्राम संसद अभियान, दो से पांच तक भविष्य की कार्य विभाजन तथा समापन सत्र होगा।

अगले वर्ष भादो की प्रतिपदा से पूर्णमासी दिनांक तीस अगस्त से चौदह सितम्बर तक पंद्रह दिन का ऋषिकेश मे ज्ञानोत्सव यज्ञ सम्पन्न होगा। इस पंद्रह दिवसीय यज्ञ मे धार्मिक श्रद्धा के साथ साथ कुछ विचार मंथन भी चलता रहेगा। विचार मंथन के लिये प्रतिदिन दो विषय निश्चित हैं जिनके दिनांक तथा विवरण ज्ञान तत्व तीन सौ इक्यासी मे आपको भेजा जा चुका है। धार्मिक आयोजन की रूपरेखा बन रही है । मंथन भी गंभीर और परिणाम दायक हो इसकी तैयारी की जा रही है। अभी से ही प्रति सप्ताह एक विषय पर ज्ञान तत्व तथा फेसबुक वाटस अप मे मै अपने विचार प्रकाशित करूंगा। उस विषय पर अन्य विद्वानो तथा पाठको के कोई विस्तृत विचार या लेख प्राप्त होंगे तो वे ज्ञान तत्व फेसबुक के माध्यम से सबको भेजे जायेगे। प्रश्नोत्तर भी लगातार चलता रहेगा। इस तरह सबके विचार सबको उपलब्ध हो जायेगे। यह मंथन सभी विषयो पर कार्यक्रम प्रारंभ होते तक चलता रहेगा । एक विषय पर चर्चा पांच घंटे की रहेगी । पहले दो घंटे मे प्रत्येक वक्ता को स्थिति अनुसार पांच या सात मिनट का समय दिया जायेगा। विषय प्रारंभ करने वाले वक्ता को दस मिनट दे सकते है। इसके बाद प्रत्येक वक्ता तीन मिनट मे दुबारा अपनी बात रख सकता है। उसके बाद प्रत्येक वक्ता एक से डेढ मिनट मे दुबार अपनी बात रख सकता है। यदि कोई श्रोता किसी वक्ता से बीच मे प्रश्न करना चाहे तो लिखकर पूछ सकता है। पांचवा एक घंटा खुले प्रश्नोत्तर का होगा । जिसमे सब लोग विचार मंथन कर सकते है। अंतिम दस मिनट मे यदि कोई प्रस्ताव कुल उपस्थिति के नब्बे प्रतिशत से पारित होता है तो वह प्रस्ताव लिखा जायेगा अन्यथा कोई प्रस्ताव पारित नही होगा। ऐसा पारित प्रस्ताव दूसरे दिन के प्रथम सत्र मे फिर से मतदान हेतु प्रस्तुत होगा और दुबारा पारित होने के बाद उसे पारित मान लिया जायेगा। इस पंद्रह दिवसीय ज्ञानोत्सव यज्ञ के लिये कोई चंदा इकठठा नही किया जायेगा। श्रद्धालु जन स्वेच्छा से जो दान देंगे उसी से खर्च की व्यवस्था होगी। पंद्रह दिवसीय ज्ञानोत्सव यज्ञ के संचालन और व्यवस्था संबंधी अंतिम निर्णय बजरंग मुनि जी का होगा।

ज्ञानोत्सव यज्ञ मे यज्ञ तथा मंथन मे कोई भी व्यक्ति शामिल हो सकता है। कोई सदस्यता का बंधन नही है। भोजन और निवास की यथा संभव उचित व्यवस्था होगी जो निः शुल्क रहेगी। फरवरी के दो दिवसीय सम्मेलन की रूपरेखा संस्थागत तथा पंद्रह दिन के ज्ञानोत्सव यज्ञ की रूपरेखा धार्मिक प्रधानता की रहेगी । आप से निवेदन है कि आप अभी से अपने अपने टिकट करा ले जिससे भविष्य मे कठिनाई न हो । आपकी उपस्थिति हम सबके लिये उत्साह वर्धक होगी।